Volume 3; Issue 1
January to March 2026

E-ISSN: 3048-6742

Sanskriti-Samvahika
संस्कृति-संवाहिका

Peer Reviewed Indexed Refereed Journal

Quarterly Journal

Sanskriti-Samvahika संस्कृति-संवाहिका

E-ISSN: 3048-6742

https://sanskritisamvahika.in

Volume 3; Issue 1; January to March, 2026; Page No. 49-57

Peer Reviewed, Indexed and Refereed Journal

मृच्छकटिकम् में वर्णित स्त्री पात्रों का समाज—वैज्ञानिक चित्रण

रश्मि द्विवेदी

शोधार्थिनी, संस्कृत विभाग,

कु0 मा0 रा0 म0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर

डॉ0 कनकलता

असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

कु0 मा0 रा0 म0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर

सारांशिका

शूद्रक का मृच्छकटिकम् अपने युग का ही नहीं, वरन् हमारे समय और समाज की भी यथार्थ कथा है। यह हमारे समय का सच प्रतीत होता है। इसमें स्त्री, न्याय—व्यवस्था, सामाजिक जीवन, शासन व्यवस्था, राजनीतिक यथार्थ, सामंती युग की विडंबनाएं, प्रेम आदि का बहुत यथार्थसम्मत चित्रण किया गया है। यहाँ प्रकृति जीवन की सहचरी भर नहीं है, अपितु जीवन—दर्शन हैं, प्रेरणा शक्ति है, ऊर्जा का अखंड स्रोत है। शूद्रक का पाण्डित्य भी अनुपमेय है। उसकी बहुज्ञता और नाट्य—कौशल का कोई सानी नहीं है। विविध ज्ञान की आभा से वेष्ठित मृच्छकटिकम् शैल्पिक सौंदर्य की दृष्टि से भी अद्वितीय कृति है। शूद्रक की भाषाई चेतना, अलंकार और छंद विधान, बिंब रचना आदि भी अनूठापन लिये हुए हैं। मृच्छकटिकम् की भाषा पाठक को चमत्कृत करने की अपूर्व क्षमता से युक्त है। भरत मुनि ने रुपक के दश प्रकारों का उल्लेख किया है। प्रकरण रूपक के दश प्रकारों में से एक है। यह संस्कृत साहित्य की एक सर्वोत्तम उपलब्धि माना जाता है। आर्षकाव्य रामायण के रचयिता वाल्मीकि आदि कवि माने गये हैं; तथा नाटक चक्र के रचयिता भास नाटककारों में प्रथम माने गये हैं। प्राचीन नाटक संस्कृत तथा प्राकृत दोनों भाषाओं में मिलते है। संस्कृत नाटकों के पात्र वैयक्तिक न होकर श्रेणीबद्ध होते हैं। मुख्य प्रकार के पात्रों के अन्तर्गत नायक, नायिका तथा

विदूषक आते हैं। समाज के निर्माण में स्त्रियों का योगदान पुरुषों के बराबर ही है और इसलिये मृच्छकटिकम् में स्त्रियों की मनोदशा का समाज–वैज्ञानिक वर्णन मिलता हैं।

कीलक शब्द – मृच्छकटिकम्, शूद्रक, स्त्री पात्र, वसंतसेना, मदनिका, धूता, सामाजिक दशा

भूमिका

संस्कृत वाङ्मय में अपने एक ही प्रकरण (रुपक के दश प्रकारों में से एक रुप) से चिरस्थायी ख्याति प्राप्त करने वाले **महाकवि शूद्रक** साहित्यालोक के आयुष्मान नक्षत्र सदृश हैं। उनका **"मृच्छकटिकम्"** संस्कृत के लौकिक साहित्य के सर्वोत्तम काव्यग्रन्थों में से एक माना गया है। प्रायः संस्कृत के महाकवियों की रचनाधर्मिता का अवलोकन करने पर यह देखा गया है कि अधिकांशतः कवियों ने अपने काव्य का आधार धार्मिक भावना से ओतप्रोत होकर किसी वैदिक या पौराणिकादि ग्रन्थ को बनाया है, कुछ ने अपने आराध्य देव को ही सर्वगुणसम्पन्न मानकर अपने काव्य के प्रमुख नायक के आसन पर सुशोभित किया है और उसी का स्तुतिगान किया है। कुछ रचनाकारों ने अपने प्रियतर आख्यानों के स्थान पर समकालिक लौकिक अवस्थाओं को उपजीव्य मानकर अनेक प्रसंगों में से किसी एक कथानक को अपनी अप्रतिम वर्णन शैली से अलंकृत कर उसे अतुलनीय बनाकर सुधीजन के सम्मुख स्थापित कर दिया। इस श्रेणी में महाकवि शूद्रक अन्यतम हैं। उनका अमर काव्य "मृच्छकटिकम्" उस समय से लेकर वर्तमान समय तक समाज में होने वाली यथार्थ स्थिति को प्रस्तुत करता है। मृच्छकटिकम् में जो सामाजिक स्थिति वर्णित है वह आज भी समाज में देखने को मिलती है।

शासन के माध्यम से शक्तिसम्पन्न होकर दुष्ट प्रवृत्तियों के द्वारा समाज में जिस प्रकार का वातावरण बनाकर सज्जनों, स्त्रियों तथा सर्वसाधारण लोगों को व्यथित किया जाता है, उसका यथार्थ चित्रण मृच्छकटिकम् में है।[1] ऐसी स्थितियाँ मध्यकाल से लेकर आज तक भी घटित होती आई हैं, इसलिये इस प्रकरण ग्रन्थ को कतिपय विद्वानों ने सार्वकालिक तथा कालजयी माना है। मृच्छकटिकम् एक धार्मिक सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक भावना का काव्य न होकर पूर्णरुपेण सामाजिक प्रकरण (नाट्य विधा का ही समानार्थी रुप) है जिसमें जनसाधारण के सम्मुख सामाजिक यथार्थ का दृश्य स्पष्ट होता है। समाज के निम्नस्तरीय व्यक्तियों का यथार्थ और उज्ज्वल चरित्र का वर्णन संस्कृत के अत्यन्त कम कवि लोग करते हैं। उसमें भी चोरों, जुआरियों, बदमाशों, शराबियों, वेश्याओं, दास–दासियों आदि का वर्णन तो नगण्यप्रायः कवि ही करते हैं परन्तु शूद्रक की लेखनी के द्वारा ये सम्पूर्ण अपने–अपने गुणों से सम्पन्न होकर रंगमंच की शोभा को बढ़ाते है।[2] शूद्रक इस समाज की छोटी से छोटी बातों से गहरा परिचय रखने वाले हैं। इस प्रकरण में कहीं पर चोर को चोरी के लिये जरूरी साधनों को इकट्ठा करते पाते हैं, तो कहीं जुआरियों को कौड़ी फेंकते हुये

अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुये देखते हैं, कहीं आरक्षियों (पुलिस) के सदस्यों को गाड़ी की तलाशी लेते हुये देखते हैं तो कहीं किसी को नगर प्रसिद्ध गणिका की धन के लोभ में हत्या करते हुये पाते हैं।

मृच्छकटिकम् में स्त्री पात्रों की विशेषतायें

यथार्थ यह है कि यह प्रकरण परम्परागत पात्रों का चित्रण न होकर समाज के दुष्ट स्वभाव वाले उद्दण्ड तथा दुराचारियों के नाना प्रकार के रंगीन चित्रों से चमकता हुआ चलचित्र है जिसमें सभी पात्र खुले व्यक्तित्व से मण्डित हैं। प्रत्येक पात्र अपने किसी न किसी रुप में अमिट छाप छोड़ता है। इसके प्रत्येक पात्र के माध्यम से तत्कालीन समाज से उस श्रेणी के लोगों की कैसी स्थिति रही होगी, यह भी दर्शाया गया है। पात्रों के द्वारा किये गये परस्पर वार्तालाप से, भावभंगिमाओं से उनकी मनोदशाओं का ज्ञान होता है कि उस स्तर के पात्र की समाज में कैसी स्थिति थी, समाज उसको या उस प्रकार के लोगों को किस दृष्टि से देखता था। सभी पात्रों का चरित्र तथा उसका अभिनय, उनका संवाद, उनका कार्य, उनके वास्तविक जीवन की यथार्थता को द्योतित करता है। इन सभी पात्रों की जीवनचर्या तथा कार्यक्षेत्र यद्यपि निन्दनीय है तथापि वैचारिक दृष्टि से कोई भी पात्र निन्दनीय चरित्र वाला नहीं है। इसी कारण चोरी करने वाला चोर शर्विलक हो अथवा जुआ खेलने वाला जुआरी संवाहक, सभी अपनी विवशता को प्रदर्शित कर उस कार्यक्षेत्र में लगे हुए हैं।

मृच्छकटिकम् में स्त्री पात्रों का कथानक के विस्तार में अद्वितीय महत्व है। महाकवि शूद्रक नारी जीवन को **समुन्नत विचार एवं अगाध प्रेम के सागर** रूप में प्रदर्शन करने के पक्षपाती हैं। अपने काव्य में उन्होंने वसन्तसेना जैसी वेश्या, मदनिका जैसी दासी, धूता जैसी सद्विचार वाली गृहिणी आदि अनेक स्त्रियाँ को चुना है जो समाज के भिन्न वर्गों से आती है। परन्तु उन सभी नारियों के चरित्र तथा निष्कलंक हृदयांकित भावों के प्रति कोई भी आक्षेप नहीं कर सकता। ***यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता*** [3]के प्रबल पक्षपाती संस्कृत कवियों में शूद्रक ने भी अपने को प्रतिष्ठापित किया है। समाज की निम्नस्तर की नारियों का चरित्र भी कितना कलंकरहित तथा उन्नत विचार युक्त हो सकता है, यह मृच्छकटिकम् के द्वारा ही हम ज्ञात कर सकते हैं। समाज में शकार प्रभृति पुरुष, जो बड़े लोगों के पर्याप्त आशीर्वाद तथा कृपा के बल पर समाज में अनेक कुकृत्य कर ताण्डव मचाते हैं परन्तु स्त्री पात्र सामाजिक मर्यादा को रखते हुये भी मानवता के विरुद्ध आचरण नहीं करती हैं।

नारी सर्वदा से ही पुरुष की छत्रछाया में अपनी गुणगरिमा का विस्तार करती आयी है। उसकी रक्षा का उत्तरदायित्त्व सर्वदा पुरुष के ही उपर है, परन्तु समाज में कुछ स्वनामधन्य पुरुषों की वित्ताश्रित, पदाश्रित अभिमानयुक्त स्वार्थलोलुपता के कारण नारी की भयावह स्थिति हो गयी। समाज में अच्छी मान–प्रतिष्ठा

वाली वसन्तसेना को शकार जैसे लोगों की विकृत मानसिकता किस दृष्टि से देखती है, यह हम शकार के सेवक विट के कथन के माध्यम से समझ सकते हैं,यथा–

त्वं वापीव लतेव नौरिव जनं वेश्यासि सर्वं भज।[4]

मृच्छकटिकम् की स्त्रियाँ त्याग, कर्तव्यपरायणता, धर्माचरणता तथा सच्चरित्रता की जाज्वल्यमान विभूति है। वसंतसेना स्वयं एक प्रतिष्ठित तथा धनसम्पन्न होने पर भी शील,स्वभाव, चरित्र एवं गुणों से युक्त परन्तु विधिवशात् निर्धन चारुदत्त से प्रेम करती है, मदनिका भी शर्विलक नामक चोर से अपने अन्तः हृदय से प्रेम करती है। अपने पति की यथार्थ स्थिति को जानने पर भी धूता अपने पति चारुदत्त से उसी प्रकार प्रेम करती है जैसा पहले करती थी। अनेक उदाहरणों से ज्ञात होता है कि मृच्छकटिकम् काल में स्त्रियाँ प्राचीन भारतीय विचार धारा से प्रभावित होकर समुन्नत विचार रखती थी। सभी वर्ग के लोग स्त्री जाति को सम्मान की दृष्टि से देखते थे, जबकि कुछ शकार प्रभृति तत्व उन लोगों को कुदृष्टि या कामुक भाव से देखते थे और परेशान करते थे। शकार के सेवक विट का कथन इस सम्बन्ध में भी दृष्टव्य हैः–

वहसि हि धनहार्यं पण्यभूतं शरीरं सममुपचरं भद्रे सुप्रियं चाप्रियं च।[5]

मृच्छकटिकम् में स्त्री पात्रों की सामाजिकता

स्त्रियों का अत्यन्त सम्मान करने वाले चारुदत्त, भिक्षु जैसे लोग भी तत्कालीन समाज में विद्यमान थे जो गणिका वसन्तसेना की जीवनचर्या के भाव और विचार से अत्यन्त प्रभावित थे। वसन्तसेना परोपकारी गुण वाली थी, गणिका वृत्ति वाली स्त्री होते हुए भी गणिकोचित व्यवहार वाली तथा धन लोभी नहीं थी। अष्टम अंक में चारुदत्त के पुराने सेवक और बाद में जुआरी तथा अंत में बौद्ध भिक्षु बने संवाहक की बात से पता चलता है कि वसन्तसेना भिक्षु के लिये अपना सम्पूर्ण धन सम्पत्ति भी देने को तैयार रहती है।

अथवालं ममैतेन स्वर्गेण। यावत्तस्याः वसन्तसेनाया बुद्धोपासिकायाः प्रत्युपकारं न करोमि यया दशानां सुवर्णकानां कृते द्यूतकाराभ्यां निष्क्रीतः, ततः प्रभृति तया क्रीतमिवात्मानमवगच्छामि।[6]

भिक्षुक के उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि उस समय समाज में स्त्रियों की दशा या उन लोगों का मनोभाव विचार कितना उन्नत था। इसके अतिरिक्त स्त्रियों में व्यवहारिक पक्ष का ज्ञान भी पुरुषों से अधिक हुआ करता था। जहाँ पुरुष शिक्षोपार्जन से ही प्राप्त ज्ञान से सामाजिक लौकिकादि व्यवहार जानते हैं वही स्त्रियाँ प्रकृति प्रदत्त ज्ञान के द्वारा सम्पूर्ण व्यवहार तथा उचितानुचित व्यवहार करती थीं जिससे लोक में उनका समुन्नत एवं प्रतिष्ठित जीवन द्योतित है।

स्त्रियो हि नाम खल्वेता निसर्गादेव पण्डिताः ।
पुरुषाणां तु पाण्डित्यं शास्त्रेणैवोपदिश्यते ।।[7]

समाज में सामान्य स्तर पर कार्य करने वाली स्त्रियाँ भी अपने स्वच्छ चरित्र से निन्दित नहीं होती थी। रूपजीवा वसन्तसेना ने भी अपने सत्यनिष्ठ चरित्र से समाज में सम्मान प्राप्त किया था। इस गणिका की दासी मदनिका का पद यद्यपि निम्न कुलोत्पन्न स्त्री की पुत्री का था परन्तु फिर भी समाज उसको निन्दा या गर्हित दृष्टि से देखा नहीं करता था और इसी कारण शर्विलक उससे अगाध प्रेम करता था।

नाटक में समकालीन स्त्रियाँ किसी पुरुष या व्यक्ति के कार्य पर नहीं वरन् उसकी विवशता को समझकर, उसके निर्मल हृदय को परख कर सच्चरित्रवान् पुरुषों से प्रेम करती थी, शर्विलक का मदनिका के प्रति प्रेम करना इसी का उदाहरण है। इसके साथ ही नाटक की स्त्री पात्रों के विचार समाज के लिये उदाहरणस्वरुप होते थे। मदनिका और चेटी वसन्तसेना की क्रीतदासियाँ है तथापि शील, विचार, चिन्तन, समरूपता आदि के कारण दोनों बसन्तसेना की प्रिय ही थीं। इससे ज्ञात होता है कि समकालिक स्त्रियों को धन तथा पद का रंचमात्र भी अभिमान नहीं था। अपनी दासियों को भी समवयस्क भाव से देखकर उनका आदर करना, समय–समय पर उनसे परामर्श लेना आदि, यह भी धनाढ्य स्त्रियों का प्रशंसनीय गुण था। यद्यपि संस्कृत नाट्यकारों का यह विशिष्ट गुण है कि प्रायः सभी ने अपने काव्यों में वर्णित स्त्री पात्रों को अधिकाधिक सम्मान देकर उच्च स्थान पर प्रतिष्ठापित किया है। उसका प्रमुख कारण यह है कि सभी ने अपने आराध्य पात्रों अथवा पुराणादि प्रथित सच्चरित्रयुक्त स्त्री पात्रों को ही अपना वर्ण्य विषय बनाया है, वह चाहे कालिदास की शुकन्तला, मालविका या उर्वशी हो अथवा भवभूति की सीता हो या मालती।[8] ये निष्कलंक चरित्र वाली स्त्रियाँ भारतीय पौराणिक ग्रन्थों के साथ–साथ जनमानस में भी अत्यन्त पवित्र मानकर अति सम्माननीय तथा पूजनीय स्थान पर विद्यमान है। इसलिए कवियों ने भी अपने काव्यों में उसी वन्दनीय चरित्र का अपने अनुसार वर्णन किया है, कही आराध्या माता के रूप में, कहीं स्वर्ग की अप्सरा के रुप में तो कही ऋषि मुनियों की पुत्री के रूप में। परन्तु शूद्रक के नाटक की स्त्रियाँ उन सभी से भिन्न हैं।

मृच्छकटिकम् में स्त्री पात्रों की चारित्रिक उच्चता

मृच्छकटिकम् की स्त्री पात्र पौराणिक या शास्त्रीय न होकर पूर्णरूपेण जनसमाज में होने वाली सामान्य स्त्रियाँ है जो अपने सत्कार्य से, सद्गुणों से ,सद्व्यवहार तथा सच्चरित्रता से अन्य स्त्रियाँ के समान अपने काव्य में पूर्ण आदर भाव को प्राप्त हुई है। निश्चित ही शूद्रक संस्कृत साहित्य जगत् के सर्वाधिक भावुक कवियों में से एक थे, जिन्हाने समाज के सामान्य वर्ग के प्रति इतने चिन्तनशील होकर इन लोगों के यथार्थ जीवन दशा को प्रस्तुत किया। विशेषकर स्त्री जाति की जीवनदशाओं का दयनीय भाव से वर्णन करने मे तो शूद्रक अन्यतम ही थे। इसीलिए अन्य कवियों की तरह रानी, मुनिकन्या, अप्सरा, देवकन्या आदि को न चुनकर पण्यवीथिकाओं पर विचरण करने वाली पण्यस्त्रियों, उनकी दासियों, निर्धन, कर्तव्यनिष्ठ, धर्मपरायण तथा सदाचारी पुरुष की आदर्श स्वरूप पत्नियों, उनकी क्रीतदासियों आदि के जीवन चरित्र एवं

दशाओं को अपना आधार विषय मानकर ऐसी स्त्रियों के समुन्नत जीवन वाली दशाओं का वर्णन करने मे शूद्रक सिद्धहस्त थे। इसलिये अपने नाटक की प्रमुख स्त्री पात्र के रुप में इन्होंने एक रूपजीवा वसन्तसेना को चुना जो सत्य और विशुद्ध प्रेम की प्रतिमूर्ति है। वह अपूर्वत्याग और गुणस्पृहा की अग्नि में निरन्तर जलकर, गणिकावृत्ति के कालुष्य को भस्म कर के भास्वर स्वर्ण के समान दमकती एक नारी रत्न है। वसन्तसेना में भवभूति कीी सीता की तरह न आदर्श की मर्यादा है और न वह मालती की तरह पिता की परतन्त्रता में आबद्ध किशोरी है। यद्यपि उर्वशी की तरह जीवन की कटु–मधुर अनुभूतियों को लेकर ही वसन्तसेना सामाजिकों के सम्मुख उपस्थित होती है, तथापि अपने त्याग, शालीनता, गुणस्पृहा और एकनिष्ठ प्रेम में वह उर्वशी को बहुत पीछे छोड़ गई है।

इसी प्रकार अन्य स्त्री पात्रों की भी स्थिति है। वसन्तसेना गणिकावृत्ति वाली महिला होती हुयी भी शिक्षा सम्पन्न नारी थी यह उसके अनेक प्रसङ्ग पर किये गये वार्तालापों से ज्ञात हो जाता है बहुत अंको में वह एक आलंकारिक वाणी बोलती है। इसी प्रकार धूता, मदनिका, रदनिका प्रभृति अनेक स्त्रियाँ भी शिक्षित नारी होने का परिचय देती है यथा वसंतसेना जब स्वयं से यह कहती है–

तत्संशयितास्मि मन्दभाग्या। एतदिदानीं मम मन्दभागिन्या ऊषरक्षेत्रपतित इव बीजमुष्टिर्निष्फलमिहागमनं संवृत्तम्।[9]

वसंतसेना ने आश्चर्य से स्वयं से ही कहा कि मुझ मंदभागिनी का यहाँ आना ऊषर क्षेत्र में पड़ी हुई बीज की मुट्ठी के समान निष्फल हो गया। यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार का आलंकारिक प्रयोग करने वाली स्त्रियों का जीवन शिक्षा–दीक्षा से उन्नत रहा होगा । इसी प्रकार वसन्तसेना के प्रेमप्रणय को स्वीकार कर चारुदत्त द्वारा उससे प्रेम करने पर चारुदत्त की पत्नी धूता का अपने पति को कुछ नहीं कहना, उससे पूर्ववत् व्यवहार करना, बसन्तसेना को बहन कहकर अपने घर मे स्वीकार करने आदि से भी नाटक के स्त्री पात्रों के स्त्रियोचित स्वभाव के उदारचरित्र का उदाहरण प्रस्तुत होता है।[10]

इसी प्रकार अपने पति को देवस्वरूप मानकर उसके सुख–समृद्धि एवं कल्याण हेतु सब कुछ करने को तैयार हो जाना– धूता का यह चरित्र सच्चरित्रसम्पन्ना भारतीय नारियों का एक गौरवपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है जो तत्कालीन समाज में स्त्रियों के एक वन्दनीय एवं उद्दाम चरित को दर्शाता है। इसी प्रकार सत्यधर्मपरायण वसन्तसेना की भी जीवनदशा है। यहाँ सत्यधर्मपरायणा शब्द का प्रयोग इस अर्थ में किया जा रहा है कि सम्पूर्ण प्रकरण में वसन्तसेना कहीं भी अपने सत्याचरण को नहीं छोड़ती है। किसी भी परिस्थिति में उसका यह स्वभाव सर्वत्र श्लाघनीय है। वह उज्जयिनी की समृद्ध गणिका की पुत्री है, परंतु इस प्रकार की समृद्धता उसके लिये सुख का कारण नहीं बनती। धनवैभव के वाह्य आडम्बर से ज्यादा वह मनुष्य के अन्तःकरण की सद्भावना एवं सद्विचार को प्रमुख मानती है, जिससे मनुष्य का व्यवहारिक पक्ष समीचीन होकर मितव्ययी स्वभाव वाला हो सके। मानवता के उसी पक्ष की वह गुणग्राहिणी है। वह

अतिसम्पन्न प्रभावशाली राजश्याल शकार जैसे अनुरक्त राजवल्लभ को, अपनी माता के द्वारा प्रेरित किये जाने के बाद भी, अस्वीकार कर निर्धन चारुदत्त के प्रति अपनी हार्दिक आसक्ति अभिव्यक्त कर शुद्ध एवं गम्भीर प्रेम का परिचय देती है। शकार ने उसे पाने के लिये उसके घर स्वर्णराशि भेज दी, माता भी साग्रह अनुरोध करते हुये उसे स्वीकार करने की प्रेरणा देने लगी, तब उस समय वसन्त सेना के द्वारा माता को दिये दो टूक उत्तर उसके हृदय की पवित्र निर्मल भावना को व्यक्त करते है। यथा–

यदि मां जीवन्तीमिच्छसि तदैवं न पुनरहं मात्राज्ञापयितव्या ।[11]

अर्थात् यदि मुझे जीवित देखना चाहती हो तो मुझसे फिर इस प्रकार का आग्रह मत करो। यह एक भारतीय नारी की सत्यनिष्ठा का ज्वलन्त उदाहरण है। नाट्यशिल्पी शूद्रक ने इस प्रकार अपने नाट्य में स्त्री पात्रों की वह जीवन शैली उपस्थापित किया है जो समाज में गर्हित कार्य करते हुये भी सच्चरित्रवाली वन्दनीया स्त्री है।

वस्तुतः कवि निर्बन्ध होता है, वह अपने पात्रों को जैसा और जिस रूप में चाहे प्रस्तुत कर सकता है। जिस प्रकार कालिदास, भवभूति, राजशेखर आदि अनेक नाट्यकारों ने स्मृति पुराणादि मे प्रचलित सकललोकविश्रुत चरित्र वाली लोकवन्दनीया देवावतारस्वरूपा स्त्री पात्रों का ही चयन किया जो पूर्ववर्तियों के द्वारा भी अनेकधा वर्णित है। यह संस्कृत नाट्यजगत् की प्रायः परम्परा ही रही है, परन्तु शूद्रक ने अपने मृच्छकटिकम् के माध्यम से नाट्य जगत् में नूतन क्रान्ति ला दी। वह वसन्तसेना जैसी पूर्ण लोचनोचित गुणग्रामगरिष्ठा लौकिक नायिका को चुनते हैं जो रूपजीवा है। समाज में सर्वाधिक हेय कार्यों में से एक कार्य ही उसकी आजीविका का मुख्य साधन है तथापि उसकी अच्छी सामाजिक प्रतिष्ठा थी। इससे यह सिद्ध होता है कि मृच्छकटिकम् काल का समाज स्त्रियौं का गुणग्राही था। उसका कार्य कैसा भी हो परन्तु उसमें सद्गुण विद्यमान है तो लोक उसको सम्मान देता था। शकार जैसे कुछ दुष्ट कामी लोगों को छोड़कर अधिसंख्य लोग नारीजनों का यथोचित सम्मान करते थे। इस नाटक के कथानक में उज्जयिनी नगरी का वर्णन प्रमुख रूप से है, सम्पूर्ण प्रकरण उसी नगरी के आसपास ही घूमता है तथापि वह नगरी शिक्षा, ज्ञान, कला, राजनीति आदि का केन्द्र था, जहाँ शिक्षित तथा सम्भ्रान्त लोग ही रहते थे, अतः यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उज्जयिनी उस सम्पूर्ण कालखंड के भूभाग का प्रतिनिधित्व करती थी।[12] वहाँ के सनाढ्य वर्ग के द्वारा सम्मानित दृष्टि से देखने का अर्थ सम्पूर्ण राज्य की दृष्टि में दिखना होता था, अतः मृच्छकटिकम् कालीन समाज शिक्षित, प्रौढ़ एवं उन्नत विचार वाले लोगों का समाज था जहाँ की नारियाँ समाज के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाती थी।

नारियों को भी शिक्षा दीक्षा, खेल, गमनागमन, भ्रमण, वेषभूषा आदि सम्पूर्ण सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यों में पूर्णरूपेण स्वतन्त्रता थी। स्वतन्त्र होते हुये भी स्त्रीजन अपने घर में एवं अपने से श्रेष्ठ, ज्येष्ठ जनों के सामने परतन्त्र रहना ही पसन्द करती थी। बसन्तसेना, धूता, मदनिका, रदनिका, चेटी आदि

इसका उदाहरण है। यह सब स्त्रियाँ बाह्य स्वातन्त्र्य प्राप्त करते हुये भी अपने मान्यजनों के सामने समभाव से नम्ररूपेण उपस्थित होती थीं। इसी प्रकार समाज में तथा गृहस्थ जीवन में भी पुरुषों साथ मिलकर काम किया करती थीं। पुरुष का भी, पति एवं परिवार के रुप में, स्त्रियाँ भरण–पोषण करती थी। यह बात चारुदत्त के इस कथन से स्पष्ट हो जाता है।

आत्मभाग्यक्षतद्रव्यः स्त्रीद्रव्येणानुकम्पितः ।

अर्थतः पुरुषो नारी या नारी सार्थतः पुमान् ।[13]

अर्थात अपने खराब भाग्य के कारण में अपनी पत्नी के धन पर पलने वाला बन गया हूँ। अपने धन न होने से ही पुरुष कभी स्त्री बन जाता है और धन से ही स्त्रियाँ पुरुष बन जाती है।

समग्र में हम यह कह सकते हैं कि तत्कालीन स्त्रियों की सामाजिक जीवन की पृष्ठभूमि पर शूद्रक ने बहुरंगी भारतीय संस्कृति के प्रभावोत्पादक चित्रों को उभार कर अंकित किया है। मृच्छकटिकम् के तत्कालीन सांस्कृतिक चित्रों में वर्तमान और भविष्य के लिये जीवन्त सन्देश है। यह संदेश समाज के विभिन्न विचारों, उनके पारस्परिक संघर्ष तथा अवान्तर संस्कृतियों के वैषम्य को दिखलाते हुये भी जीवन्त है। वे मूलवर्ती भारतीय नारी संस्कृति की पवित्र धारा को सफल बनाये रखने में समर्थ दिखाई पड़ते हैं। स्त्री जीवन की संघर्षशील ऊष्मा की सर्वाङ्गीण प्रतिमा का रचनात्मक चित्रण करने का कार्य करने वाला कविवर शूद्रक के बाद संस्कृत साहित्य में कोई दूसरा दिखता नहीं है। इस कवि ने मृच्छकटिकम् का नवीन शैली से उद्गार अवश्य किया है। इनसे पूर्व संस्कृत नाटकों की स्त्री पात्र नाट्यकार के व्यक्तित्व की छाया मात्र थीं। किन्तु शूद्रक ने उन्हें स्वतन्त्र व्यक्तित्व प्रदान किया जो संस्कृत नाट्यसाहित्य के लिये वह एक अभिनव वस्तु था। इस दृष्टि से शूदक का ऐतिहासिक महत्त्व निश्चय ही अक्षुण्ण रहेगा।

निष्कर्ष

अन्ततः हम यह कह सकते है कि शूद्रक ने, विशेषकर स्त्री पात्रों के चरित्र निरूपण तथा उनकी जीवनदशा पर विशेष जोर देकर संस्कृत नाट्यसाहित्य में रसप्रधान नाट्य धारा को एक नूतन मोड़ दिया था। अनेक प्रकार की परिस्थितियों के बीच अपने स्त्री पात्रों को खड़ा करके शूद्रक ने जिन अन्तर्द्वन्द्वों का मृच्छकटिकम् में विधान किया है वे आधुनिक मनोविज्ञान में भी सर्वथा अनुकूल हैं। विरोधी विचारों वाले पात्रों की सृष्टि से संघर्ष की योजना में अधिक सहायता मिली है। वसन्तसेना, धूता, मदनिका, रदनिका आदि भिन्न– भिन्न मनोदशाओं को व्यक्त करते हैं। इन सभी पात्रों की मनोदशा शूद्रक की काल्पनिक सृष्टि है। शूद्रक नारी चरित्रों की द्विविध कल्पना में संस्कृत नाट्यजगत् के अमर शिल्पी है, वे पारम्परिक शैली छोड़कर संस्कृत में स्त्री पात्रों के कलापक्ष का आश्रय लेकर काव्यात्मक शैली से रचना करते हैं, साथ ही भाव पक्ष को भी निरन्तर साधते दिखते हैं। अतः स्त्री भाव को आत्मसात् कर उसे व्यंजित करने में समर्थ

कविपुंगव शूद्रक की कालजयी रचना मृच्छकटिकम् में स्त्री जीवन और दशा का जो मूर्त रूप प्रकट किया गया है, यह अद्वितीय है। संस्कृत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भाषाओं के साहित्य में यह दुर्लभप्राय है।

सन्दर्भ

1. तिवारी, डॉ0 रमाशंकर, महाकवि शूद्रक, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1970, पृष्ठ **10**
2. वही, पृष्ठ **12**
3. मनुस्मृति **3/46**
4. मृच्छकटिकम् **1/32**
5. वही, 1/**31**
6. शास्त्री, डॉ0 श्रीनिवास, मृच्छकटिकम्, साहित्य भंडार, मेरठ, 1980, पृष्ठ **328**
7. वही **4/19**
8. छाबडा, डॉ0 बहादुरचंद, संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1970, पृष्ठ **582**
9. मृच्छकटिकम्, **8/15**
10. शास्त्री, डॉ0 श्रीनिवास, वही, पृष्ठ **436**
11. छाबडा, डॉ0 बहादुरचंद, वही, पृष्ठ **583**
12. मृच्छकटिकम् **3/27**
13. तिवारी, डॉ0 रमाशंकर, वही, पृष्ठ **12**